केन्द्रीय विश्वविद्यालय गुजरात, गांधीनगर के प्रथम दीक्षांत समारोह में गुजरात के माननीय राज्यपाल श्री ओ. पी. कोहली जी का संबोधन। (१८ दिसंबर, २०१८)

- मेरे लिए आपके बीच आने का यह अवसर गौरव का विषय है । इस विश्वविद्यालय की स्थापना सन् २००९ में हुई थी और लगभग १ दशक पूरा होने को है । ऐसे में इस विश्वविद्यालय के लिए आज का दिन गौरव का दिन है क्योंकि यह इस विश्वविद्यालय का प्रथम दीक्षांत समारोह है।
- किसी भी विश्वविद्यालय के लिये दीक्षांत समारोह का बहुत महत्व है । इस अवसर पर विश्वविद्यालय अपनी उपलब्धियों का लेखा-झोखा प्रस्तुत करता है । जिन छात्र-छात्राओं को उपाधि, डिग्री, मेडल आदि प्राप्त होते है उन्हें भी प्रस्तुत किया जाता है।
- हमारा देश युवाओं से तथा विश्वविद्यालय से बहुत अपेक्षाएं रखता है । विश्वविद्यालय से अभ्यासपूर्ण करके बाहर आने वाले छात्र-छात्राओं से समाज को बहुत अपेक्षाएं है । आपकी क्षमता का उपयोग आप राष्ट्र और समाज के हित के लिये करे जो देश के विकास में उपयोगी हो यह आपसे अपेक्षा है। समाज के परिवर्तन में आप अपना योगदान दें तथा अपने साथ-साथ समाज के विकास के लिये भी आप कार्य करें ऐसी अपेक्षा आपसे की जाती है और यह स्वाभाविक भी है।
- इस विश्वविद्यालय ने एक दशक से भी कम समय में अपने आपको उत्कृष्टता का केन्द्र

बना दिया है । मुझे विश्वास है कि आप अपना अभ्यास पूर्ण करके इस विश्वविद्यालय को जब छोड़के जा रहे है तो ऐसी स्थिति में आप इस संस्थान को हमेशा याद रखेंगे।

- अभी हमारा भारत देश विकासशील देशों की श्रेणी में आता है । अभी भी हम विकसित देश की श्रेणी में नहीं है । हमसे यह उम्मीद की जा रही है कि आज का हमारा विकासशील देश आनेवाले समय में विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में आ जायेगा और इस कार्य में इस विश्वविद्यालय से पढ़े हुये छात्रों का भी योगदान होगा।
- हमारे आदरणीय प्रधानमंत्रीजी नए भारत की बात करते है । नया भारत क्या होगा, कैसा होगा, उसमें क्या-क्या होगा, क्या-क्या नहीं होगा, इसका विचार करके आप भी अपने सामने नये भारत की एक छवि आँकने का प्रयत्न करे और यह विचार करे कि ऐसे भारत में आपका योगदान क्या होगा।
- पूज्य गांधीजी की एक जानीमानी पुस्तक है जिसका नाम है –"मेरे सपनों का भारत" उस पुस्तक में पूज्य गांधीजी कहते है कि भारत स्वतंत्र हो गया है ऐसा में तभी मानूँगा जब भारत में से निर्धनता, निरक्षरता और विषमता निकल जायेगी। आज जब हम अपने आस-पास नज़र दौड़ाकर देखते है तो हमें लगता है की अभी भी समाज में निर्धनता, निरक्षरता और विषमता ये तीनों पाये जाते है।
- आप अपने आपको भी यह प्रश्न पूछ सकते है कि गांधीजी के सपनों को पूरा करने में आपका भी कोई योगदान हो सकता है कि नहीं। आज हम पूरे देश में पूज्य गांधीजी की 150वीं जन्म जयंति माना रहे

है । आज के अवसर पर गांधीजी के सपनों को पूरा करने का संकल्प लेना बहुत ही प्रासंगिक होगा । हम सभी को एक नया समाज बनाना है जिसमें पूज्य गांधीजी ने बताई थी वो कमज़ोरियाँ नहीं होगी ।

- यहाँ पी. एच. डी. के छात्रों को भिन्न-भिन्न विषयों पर डिग्री दी जा रही थी तो मुझे भी लग रहा था कि इस विश्वविद्यालय में कैसे-कैसे आधुनिक अभ्यासक्रम और विषय पढ़ाये जाते है । आज का युग स्पर्धा का युग है । इसीलिए यह जरूरी है कि हमारे विश्वविद्यालय पाठ्यक्रमों में लगातार नये नये पाठ्यक्रम जोड़ते रहे । एक गतिशील विश्वविद्यालय की यही तो पहचान है । नये पाठ्यक्रमों से शिक्षको को भी update रहना पड़ेगा और यही अच्छे विश्वविद्यालय की पहचान है ।
- विश्वविद्यालय का काम क्या है ? विद्यार्थियों को एक निर्धारित समयमर्यादा में पहले से सुनिश्चित पाठ्यक्रम पढ़ा देना, इतना ही काम विश्वविद्यालय का नहीं है । उनका काम छात्रों के चरित्र का निर्माण करने का भी है । पहले दीक्षांत समारोह में छात्रों को कहा जाता था कि "सत्य बोलो","धर्म का आचरण करो", "माता-पिता और गुरु के प्रति आदर और सन्मान का भाव रखो ।" ये भी कहा जाता था कि जो आचरणीय कर्म हैं वो करो और अनाचरणीय कर्म है वो न अनाचरणीय करो । मैंने कहीं पढ़ा था कि तीन प्रकार की efficiency होती है – intellectual efficiency, professional efficiency, emotional efficiency । आपको अपने जीवन काल में एक ऐसा व्यक्ति बनना होगा जो

intellectual efficiency, professional efficiency के साथ emotional efficiency वाला भी हो । आपको आपका अभ्यासक्रम पूर्ण करने के बाद बाहरी दुनिया में विकास की दौड़ में जो पीछे रह गये है उनके प्रति भी संवेदना रखी जाये ये देखना होगा । यदि ऐसे पिछड़े हुये वर्ग के प्रति आपको सहानुभूति और संवेदना होगी तो ही आप समाज के विकास के लिये कुछ कर सकेंगे ।

- मित्रों, यह आपका प्रथम दीक्षांत समारोह है । समारोह बहुत अच्छा हुआ, सफल रहा और मैं आपको उसके लिये बधाई देता हूँ । एक और बात में आपसे कहना चाहूँगा । वर्षो पूर्व मैंने एक संत के मुंह से सुना था कि "सुख देवत सुख होत है, दु:ख देवत दु:ख ।" इसका अर्थ यह है कि आप दूसरों को सुख देंगे तो आपको भी सुख मिलेगा । भक्त कवि नरसिंह मेहता भी यह कहते थे कि आप सच्चे वैष्णव बनें। इसका भी अर्थ यह था कि आप अपने आपको पराये लोगों की पीड़ा से जोड़े । क्या अब आप सच्चे वैष्णव जन बन सकते हो? क्या आप पराये लोगों की पीड़ा को महसूस कर सकते हो, समाज को आपसे यह अपेक्षा है और मुझे विश्वास है कि इस विश्वविद्यालय से निकले हुये युवा-युवतियां इस प्रकार की अपेक्षाओं को पूरा करेंगे ।
- आज इस विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह पर मुझे बुलाया गया इसके लिये में आयोजकों का बहुत-बहुत आभारी हूँ । धन्यवाद । जयहिन्द ।